प्रो० हरिमोहन झा

जन्म : 18 सितम्बर 1908 ई०।

जन्म-स्थान : कुमर बाजितपुर, वैशाली।

मृत्यु : 23 फरवरी, 1984 ई०।

कृति : **मैथिली–** 'कन्यादान' (1933), 'द्विरागमन' (1943)– उपन्यास; 'प्रणम्य देवता' (1945), 'रंगशाला' (1950), 'एकादशी'– कथा-संग्रह; 'खट्टर ककाक तरंग' (1949)– व्यंग्य; 'चर्चरी' (1960)– विविध; 'जीवन यात्रा' (1984)– आत्मकथा' आदि। अनेक रचना अन्यान्य भाषामे अनूदित।

हिन्दी– 'न्याय दर्शन', 'वैशेषिक दर्शन', 'तर्कशास्त्र (निगमन)', 'भारतीय दर्शन' (अनुवाद), 'दार्शनिक विवेचनाएँ' (संपादित) आदि।

अंग्रेजी– 'ट्रेन्ड्स ऑफ लिंग्विस्टिक एनेलेसिस इन इंडियन फिलॉसफी' (शोध-ग्रंथ)।

पुरस्कार : **'जीवन यात्रा'** (आत्मकथा) पर मरणोपरान्त 1985 ई० मे साहित्य अकादमी पुरस्कार।

आधुनिक कालमे मैथिलीकेँ लोकप्रिय बनयबामे एवं पाठकक परिधिकेँ विस्तृत करबामे प्रो० झाक श्रेय अप्रतिम अछि। स्व० जनार्दन झा 'जनसीदन'क सुपुत्र एवं पटना विश्वविद्यालयमे 'दर्शनशास्त्र' विभागमे प्रोफेसर झा एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार छथि। मैथिली साहित्यमे एक नवीन विधा– 'व्यंग्य'क सृष्टि कयनिहार प्रो० झा प्रतिष्ठित कथाकार मानल जाइत छथि। यद्यपि हिनक रचना सभमे प्रतिबिम्बित हास्य-व्यंग्यक माध्यमे परम्परागत रूढ़ि, पाखण्ड आदि सामाजिक विरूपता पर प्रहार भेटैत अछि तथापि साहित्यकेँ मनोरंजक बनायब हिनक मुख्य अभीष्ट बुझि पड़ैछ।

पाठ-संदर्भ : प्रस्तुत कथा नारी-जागरण पर केन्द्रित अछि। संगहि नारीक प्रति परम्परावादी रूढ़िग्रस्त दृष्टिकोणक प्रतिकार स्वरूप एक प्रगतिशील मूल्यक स्थापना सेहो कयल गेल अछि। कथाकार अपन प्रतिभाक अनुरूपेँ मिथिलाक ग्रामीण परिवेशक सजीव चित्रण कयलनि अछि।

ग्रामसेविका

मकुनाही पोखरिपर लूटन मिसर वैद्यकेँ मुंह धोइत देखि काशीनाथ कहलथिन- वैद्यजी, एकटा नव गप्प सुनलिऐक अछि ?

वैद्यजी साकांक्ष होइत पुछलथिन-की ? कोन बात भेलैक अछि ?

काशीनाथ बजलाह-अपना इलाकामे एक टा ग्रामसेविका आयल अछि। वैद्यजी पुछलथिन-'ग्रामसेविका'क की अर्थ? की ओ संपूर्ण गामक पैर दबाओति ?

काशी० - ओ घर-घर घूमि कऽ स्त्रीगणकेँ शिक्षा देति।

वै० - की शिक्षा देति ?

का० - यैह जे पर्दा तोड़ि कऽ सभ काज करै जाइ।

वैद्यजी दातमनिक जिभिया फेकैत बजलाह- आब जे-जे ने हो। फूदन चौधरी घाटपर बैसल लोटा मँजैत रहथि। ई गप्प सुनि बजलाह - ओकर वयस की हैतैक ?

काशीनाथ ठिकियबैत कहलथिन-यैह करीब अट्ठारह-उन्नैस।

चौ०- विवाहिता अछि कि कुमारि ?

का०- देखबामे तँ कुमारिए जकाँ लगैत अछि।

चौ०- तखन ओ अनका सिखौतैक ? **नतिनी सिखाबय बुढ़ दादीकेँ** !

का०- चौधरीजी, से नहि कहियौक। ओ बहुत पढ़लि छैक। तेँ सरकार एहि काज पर ओकरा बहाल कैने छैक।

चौधरीजी कुरुड़ करैत बजलाह- हौ, तोँ सरकारकेँ की बुझैत छह ? अनकर बहु-बेटीकेँ नचाकऽ देखबामे बड़ मन लगैत छैक। पतिव्रतासँ ओकरा कोन काज ?

तावत् कान पर जनउ चढ़ौने पहुँचि गेलाह पंडितजी। बजलाह- एहि युगमे भ्रष्टक उदय छैक। जे स्वयं भ्रष्ट रहैत अछि से सभकेँ अपने सन बनबय चाहैत अछि। ओ आबि कऽ सौंसे गामक स्त्रीगणकेँ दूरि कऽ छोड़ि

देत । तखन कि एकोटा बेटी-पुतोहु कथा मानत? ओकरा 'ग्रामसेविका' नहि 'ग्रामशोधिका' बुझू।

बौकू बाबू एतीकाल धरि ढोँढ़ी पर्यन्त जलमे ठाढ़ भेल 'अघमर्षण सूक्त' जपैत छलाह। आब नहि रहि भेलनि। बजलाह– हम तँ किन्हु ओहि छौँड़ीकेँ अपना आङनमे नहि टपय देबैक ।

काशी०– बाबा, ओकरा 'छौँड़ी' नहि कहियौक। ओ अफसर भऽ कऽ आयलि अछि।

बौकू बाबू उत्तेजित होइत बजलाह– एहि गाममे अफसरी शान नहि चलतैक। जौँ हमरा घरकेँ बिगाड़य आओति तँ झोँट धऽ कऽ मारि करचीकेँ, मारि करचीकेँ घूठ तोड़ि देबैक।

तावत बौकू बाबूक पौत्र हकमैत ओहिठाम पहुँचि गेलनि। बौकू बाबू पुछलथिन-की हौ भटुकुन ! एना दौड़ल किएक अयलह अछि ? घरमे साँप बहरेलौह अछि की ?

भुटकुन हँफैत-हँफैत कहय लगलथिन-एकटा मौगी खूब उज्जर नूआ पहिरने आयलि अछि। दलानमे कुर्सी पर बैसल अछि। कहै छैक जे आङन जा कऽ सभसँ भेंट करब। माय-काकी तँ तैयार छथिन। परन्तु दादी कहलनि जे दौड़ि कऽ अपना बाबासँ बुझने आबह।

बौकू बाबू सशंकित होइत पुछलथिन– ओ के थीक? की करय आयलि अछि? हमरा आङनसँ कोन काज छैक ?

भुटकुनकेँ चुप्प देखि काशीनाथ पुछलथिन– की हौ भुटकुन ! ओकर माथ उघारे छैक कि ने ?

भुटकुन- हँ ।

काशी०- हाथमे बैगो छैक?

भुट०- हँ ।

काशी०-तखन निश्चय वैह थीक।

बौकू बाबू क्रोधसँ बताह होइत बजलाह– हड़ाशंखिनीकेँ और कोनो घर नहि भेटलैक ? सभसँ पहिने हमरे शोधय आयल अछि?

पं०जी, वैद्यजी ओ चौधरी जी आनन्दसँ मुसकुरा उठलाह। बौकू बाबूकेँ किछु नहि फुरलनि, चट्ट दऽ एक थापड़ कसि कऽ भुटकुनक गालमे लगा देलथिन।

जखन बौकू बाबू आङन पहुँचलाह तँ चकित भऽ उठलाह। जकरा ओ भरि बाट डाइन, राक्षसी, कुलटा आदि नाना प्रकारक उपाधि दैत आयल छलथिन तकरा देखै छथि जे आँचर कसने, एक हाथमे झाड़ू ओ दोसरामे फेनाइल नेने, हुनका आङनक मोड़ी साफ करबामे लागल अछि और अपना आङनक स्त्रीगण मरौत काढने पाछाँ ठाढ़ि भेल बक्कर-बक्कर ताकि रहल छथिन। बौकू बाबूकेँ आङनमे पैर दितहि मोड़ीक गन्ध लगैत छलनि। नित्य प्राणायाम करैत अबैत छलाह। से आइ खुलि कऽ साँस लेलनि। ओसारा पर सभ दिन कूड़ा-कचराक ढेरी टपि कऽ जाय पड़ैत छलनि। आइ देखैत छथि तँ एकदम 'लाइन क्लीयर'! कतहु एकटा फालतू चीज नहि। चौकठ लग एकटा कोइला सन कारी लालटेन टाङल रहैत छलनि से कैक दिन माथमे ठेकि जाइत छलनि। आइ देखै छथि तँ ओ लालटेंन साफ चमकैत एक कोनमे खुट्टीसँ लटकल अछि। हुनका घरमे छौ मासँ जे झोल जमल छलनि तकर आइ नामोनिशान नहि। ई कायापलट कोना भऽ गेलैक ? बौकू बाबू सोचय लगलाह- अहा! एहने संस्कार वाली यदि अपनो घरमे रहैत तखन नित्य किएक गदह-किच्चन होइत?

बौकू बाबू पूजा पर बैसलाह तँ जँगला सँ देखाइ पड़लनि जे ओ लड़की पछुआड़मे ठाढ़ि अछि। कान्हमे एकटा बैग लटकौने, जाहि पर सुन्दर अक्षरमे 'विमला देवी' अंकित छैक। एकटा नेबोक गाछमे कीड़ा लागल छलैक। ताहिमे ओ कोनो दबाइ घोरिकऽ पिचकारी दऽ रहल अछि। बीच-बीचमे स्त्रीगणकेँ किछु बुझा रहल छनि।

देखैत देखैत एकटा आश्चर्य बात भऽ गेल। जे बरहड़बा वाली सासुक देखा-देखी सदिखन नाक झपने रहैत छलीह से एकाएक विमला देवीक निर्देशानुसार भरकछ भीड़ि हाथमे कोदारि लेलनि और बाड़ीमे नेना द्वारा अपवित्र कयल माटिकेँ काटि कऽ फेकय लगलीह। देखैत-देखैत बाड़ी साफ भऽ गेल।

थोड़ेक काल बाद विमला देवी साबुन लऽ कऽ हाथ धोलनि। एक मिनट बच्चाकेँ दुलार कयलथिन। तदुपरांत दुनू हाथ जोड़ि सभकेँ नमस्ते

कऽ विदा भऽ गेलीह। बौकूबाबू मंत्रमुग्ध भऽ देखैत रहलाह। ई तँ चांडालिन जकाँ नहि, मुनि-कन्या जकाँ लगैत अछि। जत्तहि जायत, तत्तहि तपोवन बना देत। बलहुँ बेचारीक प्रति ओतबा अपशब्द कहलिऐक । बौकू बाबू दुर्गापाठ करय लगलाह। किन्तु घुरि-फिरि कऽ वैह लाल ठोपवाली श्वेतवसना ध्यानमे आबि जाइन।

भोजनकाल बौकूबाबू स्त्रीकेँ कहलनि- देखलिऐक, बंगालिन लड़कीक पानि?

स्त्री कहलथिन– ओ बंगालिन नहि, देशीए अछि।

बौकूबाबू कहलथिन– ई हम मानि नहि सकैत छी। ओ पानि एम्हर कहाँ पाबी।

स्त्री कहलथिन- बंगला नूआ देखने नहि बुझिऔक। ओ मैथिलानीए थीक। कमलपुर घर छैक।

ई सुनैत बौकूबाबूकेँ धक्क दऽ करेज सालि देलकनि। पहिलुक प्रफुल्लता विलीन भऽ गेलनि। स्याह होइत मनमे सोचय लगलाह– बंगालिन किंवा पंजाबिन रहैत तँ ई सभटा छजितैक। परन्तु मैथिल कन्या भऽ कऽ एना करैत अछि ? अनकच्छल बात! **खंजन चललीह बगड़ाक चालि**, अपनो चालि बिसरि गेलीह! **देशी मुर्गी विलायती बोल!** प्रकाश्यतः बजलाह-एकरा माय-बाप नहि छैक की? एखन धरि कुमारिए किएक अछि ?

स्त्री कहलथिन– हम पुछलिऐक, 'हे दाइ ! तोँ एहन सुन्नरि छह। विवाह किएक ने करैत छह ?' तखन हँसय लागलि। बाजलि– 'बच्चा उत्पन्न करयवाली देशमे बहुत गोटा छथि। एखन सेवा करयवालीक कमी छैक। तेँ हम यैह मार्ग अपनौने छी।' हम कहलिऐक– 'हे दाइ, तोरा एतबेटामे एतेक रास बुद्धि कोना भऽ गेलौह ?' तखन फेर हँसय लागि गेल।

बौकबाबू कहलथिन– अन्य देशी रहैत तँ हम सभटा बात शिरोधार्य कऽ लितिऐक। परंच एहि माटिसँ बहरा कऽ ई एतबा शान देखाओति से कोना मानि लेबैक? कतबो बंगला नूआ पहिरथु, परन्तु धातु तँ तिरहुतिए छनि। ई चाली भऽ कऽ साँपक देखाउस करै छथि। किछु भऽ जेतनि तँ सभटा फुचफुच्ची बहार भऽ जेतनि।

किछुए दिनमे विमला देवीक ज्योतिसँ घर-घर आलोकित भऽ उठल। बुचौलीवालीक इनारमे कीड़ा सहसह करैत छलनि से आब ब्लीचिंग पाउडर पड़ि गेलनि। जहाँ सभ घैल सतत मुँह बौने रहैत छलनि, तहाँ आब साफ मलमलक टुकड़ासँ झाँपल रहैत छैक। रुपौलीवालीक नेनाक देहपर सेर भरि रिट्ठा-रिट्ठी लादल रहैत छलनि से उतरि गेलनि। जहाँ बंगटक नाकमे सतत पोंटा लटकल रहैत छलनि, तहाँ आब हाइड्रोजन पेरोक्साइड दऽ कऽ हुनक कान साफ कयल जाइत छनि। ठकौलीवालीक बच्चा जहाँ दुरुखेमे नदी फीरि दैत छलथिन तहाँ आब घरसँ बाहर जाकऽ लघी कऽ अबैत छथि। सिसौनावाली बारह बजे मुँह धोबय बैसैत छलीह से आब सूर्योदयसँ पहिनहि स्नान कऽ लैत छथि। मुजौनावालीकेँ नित्य बेरू पहर खुटौनावालीसँ झगड़ा होइत छलनि। से आब दुनू गोटा बैसि कऽ ऊनी मोजा बुनैत छथि। एवं प्रकारेँ गामक आमूल परिवर्त्तन भऽ गेल। विमलादेवीक डरसँ कोनो बच्चाक आँखिमे काँची नहि। सभक नख साफ। कोनो सड़कपर नाक मुनबाक काज नहि। सभक बाड़ी-झाड़ीमे कोबी, टमाटर और मटरक छीमी लहराइत। भिट्टोवाली पर्यन्त भिटैमिन बुझय लागि गेलीह।

नारी-समाजक ई नव जागरण केवल घर धरि सीमित नहि रहल। बाहरो ओकर किरण प्रस्फुटित होमय लागि गेल।

एक दिन पंच लोकनि दलान पर बैसल रहथि। देखै छथि जे समौलवाली मोसम्मात सामने खेतमे मोढ़ापर बैसि धान कटा रहल छथि। ई देखैत पंडितजीकेँ लेसि देलकनि। बजलाह– आब गाममे अकरहर भऽ रहल अछि।

काशीनाथ कहलथिन– घरमे पुरुष-पात नहि छनि। तेँ स्वयं कटबा रहल छथि। एहिमे दोष कोन ?

पं० जी बजलाह– सैह छलनि तँ दोग-दागसँ कटबा लितथि। एना बीच ठाम महोखा जकाँ बैसि कऽ पुरुषक छाती पर मूँग किएक दलैत छथि?

काशीनाथ कहलथिन– ग्रामसेविका.....

ग्रामसेविकाक नाम सुनतहि पं० जीक क्रोधाग्नि भड़कि उठलनि। हुनका पंहिने घर-घरसँ नेओत पड़ैत रहय छलनि। विमला देवीक अयलासँ

बहुत किछु कम्म भऽ गेलनि। एहि द्वारे ओ खौँझायल रहैत छलाह। बजलाह– गाममे तेहन ने चांडालिन आयलि अछि जे आब एकोटा धर्म-कर्म एहि गाममे नहि रहय देति। एतबा दिनक सञ्चित मर्यादा आब नालीमे बूड़ल जा रहल अछि।

वैद्यजी गामसेविका पर विशेष प्रसन्न नहि छलाह। कारण जे विमला देवी बभनटोलीसँ लय मुसहरटोली धरि घर-घर जा कऽ स्त्रीगणकेँ मुफ्त दबाइ दऽ अबैत छलथिन। कतेक युवतीकेँ इंजेक्शनो देनाइ सिखा देने छलथिन। एहि सभसँ वैद्यजीक आमदनी मारल जाइ छलनि। ओ फुफकार छोड़ैत बजलाह– सभ फसादक जड़ि थीक ई ग्रामसेविका । वैह केँचुआ सभकेँ फूकि फूकि साँप बना रहल अछि। जँ किछु दिन और एहि गाममे रहि गेल तँ हमरा लोकनिक निर्वाह हैब कठिन।

फूदन चौधरीकेँ अपना घरक मर्यादा पर बड्ड गर्व छलनि। बजलाह– जौँ हमरा घरक स्त्री एना करय तँ गरदनिमे.....

एतबा बजैत-बजैत चौधरी जी एकाएक चिहुँकि उठलाह। जेना सहसा बिजलीक धक्का लागि गेल होइन! सड़कक कात कोल्हुआड़मे हुनक स्त्री स्वयं ठाढ़ भऽ कऽ गुड़क चेकी बनबा रहल छलथिन। चौधरी जी चुप्प भऽ गेलाह।

वैद्यजी पं० जी दिस आँखि मारलथिन। पं०जी बजलाह– 'कलिकाल जे ने कराबय !' वैद्यजी उत्तर देलथिन– 'कलिकाल की करतैक? हमरा आङनमे कथमपि एना नहि भऽ सकैत अछि।'

परन्तु वैद्यजीक गर्व खर्व होइत देरी नहि लगलनि। कारण जे जैखन ओ पं० जीक संग सड़क पर अयलाह कि देखै छथि जे बैदाइन अपना पाँच वर्षक कन्याकेँ आँगुर धरा कऽ स्कूलमे नाम लिखाबय लऽ जा रहल छथि। वैद्यजी अनठा कऽ दोसर बाट धऽ लेलनि।

पं० जी मुसुका उठलाह। हुनका विश्वास भऽ गेलनि जे ग्रामसेविका सभ स्त्रीकेँ बहका देलकनि। केवल हुनके पंडिताइन टा बाँचल छथिन। एहि विचारसँ प्रसन्न होइत पं० जी अपना दलानमे अयलाह तँ स्तम्भित रहि

गेलाह। पंडिताइन दरवाजा पर ठाढ़ि भेल अपना समधिसँ निधोख गप्प कऽ रहल छलीह। पं० जीकेँ देखि सहज शान्त स्वरसँ बजलीह-देखू, कतीकालसँ समधि बैसल छथि। आब अपन दुनू गोटा गप्प करू। हमरा आङनमे काज अछि।

पं०जी ई दृश्य देखि अवाक् रहि गेलाह।

□ □ □

एक दिन सम्पूर्ण गामक लोक आँखि खोलि कऽ देखि लेलनि जे नारी समाजक सामूहिक शक्ति केहन होइ छैक। विमला देवीक नेतृत्वमे गामक समस्त बेटी-पुतहु आँचर कसने श्रमदान द्वारा महिला-पुस्तकालयक न्यो देबय जा रहल छथि। बूढ़ लोकनिक मुँह तेहन भऽ गेलनि जेना केओ चिरैताक काढ़ा पिया देने होइन। बूढ़ी लोकनिकेँ बुझा गेलनि जे आब जँतनाइ-पिचनाइ ओ ढील हेरनाइ गेल। किन्तु एहि प्रवाहकेँ रोकब असंभव छल।

थोड़बे दिनमे 'महिला-क्लब' तैयार भऽ गेल। जे बात स्वप्नोमे विश्वास करबा योग्य नहि छल से आब प्रत्यक्ष होमय लागल। बुचौलीवाली नित्य अखबार पढ़य लागि गेलीह। पंडिताइन आ बैदाइन ग्रामसुधारक योजना बनाबय लगलीह। बरहड़बावाली ओ भखराइनवाली समाजवाद पर बहस करय लगलीह। तनौतावाली तानपुराक सुर चढ़ाबय लगलीह। मुजौना ओ खुटौनावाली बैडमिंटन खेलाय लगलीह।

दुइए वर्षमे गामक कायाकल्प भऽ गेल। तेहन उत्साहक लहरि आयल जे फूदन चौधरीक भाभहु स्कूल मे मास्टरी करय लगलीह, बैदाइनक बेटी नर्सक काज सीखय लगलीह और पंडिताइनक पुतहु रेडिओ मे जा कऽ बाजय लगलीह।

ग्रामसेविका नारी-समाजक उन्नति देखि पुलकित भऽ उठलीह। एतबा कम दिनमे एहन क्रान्ति! हुनका आशातीत सफलता भेटल छलनि। जेना ककरो रोपल कलम दुइए वर्षमे फरय लागि जाइक, तेहने आनन्दसँ हुनक हृदय भरि गेलनि। परन्तु आइ ओ अपन उद्यानकेँ छोड़ि कऽ जा रहल छथि। हुनक दोसर इलाकामे बदली भऽ गेल छनि।

आइ विमला देवी गामसँ विदा भऽ रहल छथि। ताहि उपलक्ष्यमे सभा आयोजित अछि। पुरुषोसँ बेसी महिलाक संख्या देखबामे अबैत अछि। आबालवृद्धवनिता सभक आँखिमे नोर भरल अछि! जेना कोनो बेटी सासुर जा रहल हो। अथवा मन्दिरसँ प्रतिमाक विसर्जन भऽ रहल हो। नवयुवती सभ विमला देवीकेँ फूलक माला पहिरौलथिन। युवक लोकनि मान पत्र देलकनि आ वृद्ध लोकनि दूर्वाक्षत लऽ आशीर्वाद देलथिन। वृद्धागण खोँइछ देलथिन। सभसँ वयोवृद्धा छलीह पंडितजीक पितामही। ओ कहलथिन– बेटी, तोहर गुण हमरा लोकनि कहियो नहि बिसरब। आँखि निपट्ट छल। से तोँ आबि कऽ फोलि देलह। भगवान तोहर कल्याण करथुन।

विमला देवी अत्यन्त नम्रता ओ शालीनतापूर्वक उत्तर देलथिन, हम अहीँ लोकनिक बेटी थिकहुँ। सेवा करब हमर धर्म थीक। हम केवल अपना कर्त्तव्यक पालन कयलहुँ अछि। एहिमे हमर बड़ाइ कोन ? सफलताक श्रेय अहीँ लोकनिकेँ अछि जे सभ गोटा मिलि कऽ हमरा सहयोग दैत गेलहुँ। अहाँ लोकनि हमरा जे स्नेह प्रदान कयलहुँ से हम जीवन भरि स्मरण राखब। एही अधिकार पर हम एक वस्तु मंगैत छी। एहि गाममे जे ज्योति जागल अछि तकरा मिझाय नहि देब। यैह हमर सभसँ बड़का विदाइ थीक।

लोकक आँखि भरि ऐलैक। भगवान करथु घर-घरमे एहने विमला सन बेटी होथि। गामक बेटी पुतहु श्रद्धावश विमलाक आरती उतारय लगलीह। एक युवती हारमोनियम पर समदाउनि उठौलनि।

ताहीकाल टमटमसँ उतरलाह बतहू बाबू । बौकू बाबूक बड़का भाइ, जे आइ तीन वर्ष पर कामाख्यासँ आबि रहल छथि। स्त्री-पुरुषक एहन अद्‌भुत अभूतपूर्व सम्मेलन देखि ओ क्षुब्ध भऽ किछु काल आँखि फाड़ि तकैत रहलाह। एहिठाम एना भैरवी-चक्र किएक लागल अछि ? पुनः अपन आँखि-कान टोयलनि जे कतहु धोखा तँ ने भऽ रहल अछि। फेर अपन माथ ठोकलनि जे कतहु गड़बड़ तँ ने अछि। तखन अपन पौत्रकेँ सोर कयलनि– की हौ, बुच्चुन छऽ हौ ? सौंसे गाम बताह भऽ गेल अछि कि हमहीँ बताह भऽ गेल छी?

बुच्चुन पैर छुबैत कहलथिन-बाबा, एको शब्द बजियौक जुनि। आबे गाम सम्मत भेल अछि।

•

प्रश्न ओ अभ्यास

1. कान पर जनउ चढ़ौने पंडितजी की बजलाह ?
2. बौकू बाबू उत्तेजित होइत की कहलथिन ?
3. हँफैत भुटकुन की समाद अनने छलाह?
4. क्रोधसँ बताह होइत बौकू बाबू की बजलाह ?
5. आँगन पहुँचि बौकूबाबू किएक चकित भऽ उठलाह?
6. वैद्यजी ग्रामसेविका पर विशेष प्रसन्न किएक नहि छलाह?
7. पंडितजी कोन दृश्य देखि अवाक् रहि गेलाह ?

गतिविधि:

1. 'ग्रामसेविका' कथाकेँ एकांकीमे परिवर्तित करू ।
2. 'ग्रामसेविका' कथाक आधार पर ग्रामीण परिवेशक वर्णन करू ।
3. पठित कथासँ दस गोट संज्ञा शब्द ताकि ओहिसँ विशेषण बनाऊ ।
4. निम्नलिखित कहबीक प्रयोग वाक्यमे करू :

नतिनी सिखाबय बूढ़ दादीकेँ, खंजन चललीह बगड़ाक चालि, देशी मुर्गी विलायती बोल, कनही गायकेँ भिन्न बथान, चोर-चोर मसिऔत भाय, दसक लाठी एकक बोझ, भेल बियाह मोर करबह की ।

निर्देश :

(क) शिक्षकसँ अपेक्षा जे ओ छात्रकेँ प्रो. हरिमोहन झाक आनो-आन कथासँ परिचित कराबथि।

(ख) मिथिलाक तत्कालीन ग्रामीण परिवेशसँ छात्रकेँ अवगत कराओल जाय।

(ग) 'ग्रामसेविका'क कार्य आ दायित्वसँ छात्रकेँ अवगत कराओल जाय।

(घ) मिथिलाक पारम्परिक रूढ़िवादिता, पाखण्ड, अंधविश्वास आदिसँ छात्रकेँ अवगत कराय हुनकामे नव जागरणक दृष्टिकोण उत्पन्न कयल जाय ।

□